कविता संभव

प्रकाशक :

कलम घर प्रकाशन

पोकरण हाऊस

जोधपुर

मुद्रक :

कलम घर प्रेस

जोधपुर

मूल्य १०) प्रथम संस्करण १९७३

समर्पण

• स्वर्गीय पूज्य पिताजी के चरण कमलों में समर्पित •

श्री कैलाश व्यास
श्री सुशील व्यास
श्री त्रिलोकीनाथ अकेला

इनका आभार प्रदर्शित करता हूं।

नरपत "मौन"

एक
दिन
का | सूरज

लकवे से पीड़ित
ठंड से
उकता कर
बाहर सडक पर खडी
चुल बुली धूप से
आंखे मिलाता हूं
सड़क पर तैरती
युवतियां (?)
कपड़े उतार देती है
आंखों में
"मैं"
दिखा देता हू
नग्नता को
आईना
काट खाता हूं
पीठ को (पागल कुत्ते की तरह)
खण्डित कर देता हूं
उरोज
लाल रक्त
पीली धूप
सरचना करती है
तृप्ती की
एक दिन का
उत्तेजित सूरज
शांत होता है
हजारों
बलात्कारों के बाद !

बदतर से
॥
बहतर तक

चुरा लीजिए
सोए वक्त मे
उस पात्र को
जो मर गया हो
किताबों में
या जिसकी मौत
हो गई हो भाषा में
महसूस करेंगे
आज
आप बहतर हैं
कल की उस
बदतर घटना से !

अतीत की
भ्रांत उपलब्दया
हवा में चमकती
चिंगारियां
घुटने टेक देती है
प्रत्यक्ष
क्या ?
अस्वीकारा नही जा सकता
प्रवतीवश
अचानक
कैसे थे वो दिन
मृगतृष्णा के गीत
जिन्होंने धकेला
प्रतिक्षण
उस अंधकार मे
प्रकाशित हो जाता है
दर्द जहा
और अधिक ..
और अधिक....
और अधिक...... ।

असभ्य हठ

※※※

प्रेमिका
तुम्हारे फूले स्तन
और उचे नितम्ब पर
हजार-हजार पुरुषों की नजरें
विषीले कीड़ो के समान
रेंगती है
ऐसे हर अवसर पर
तुम्हारे फड़फड़ाते
रूखे कपोल
थमा देते हैं
मेरे हाथों को कटार
और मेरी गोपन कामनाएँ
उतारू हो जाती है
एक असभ्य हठ पर
जी में आता है
आराधना करू
अर्चना को
तुम्हारे सुर्ख स्तनो की
बलि चढ़ा कर !

हार्यसिंथ

❀ ❀ ❀

अंधेरा होते ही
मुझ से पहले
कोई सो जाता।
हार्यसिंथ की
खुशबू बिछाकर
टटोल कर देखता हूं
कोई नहीं होता
बिस्तर पर पड़ी
सलवटों के सिवा
अनजाना भय
बंद कर देता है
हर खिड़की
हर द्वार
फिर भी न जाने कौन
चली आती है
यादों के पतले पर्दों से
स्वप्न में
एक शम्मा जला देती है।

अभिव्यक्ति

● 卐 ●

रेणू का रेगिस्थान
पत्थर का गूंगापन
गर्म मुल्क का ठडांपन
क्यों तुलना करती हो मेरी
इन खण्डरों से
आदमी और खण्डर
अधूरा प्यार और पाबन्दी
क्या यही पहचान है मेरी ?
मत जोड़ो मुझे-
इन उपनामों से
टूटा सही
मगर हूं तो आदमी
मत दो मुझे
"पत्थर' की
"अभिव्यक्ति"

हार्यसिंथ

❀ ❀ ❀

अंधेरा होते ही
मुझ से पहले
कोई सो जाता
हार्यसिंथ की
खुशबू बिछाकर
टटोल कर देखता हूं
कोई नहीं होता
बिस्तर पर पड़ी
सलवटों के सिवा
अनजाना भय
बंद कर देता है
हर खिड़की
हर द्वार
फिर भी न जाने कौन
चली आती है
यादों के पतले पर्दो से
स्वप्न में
एक शम्मा जला देती है।

अनछुए सम्पर्क

卐 卐 卐

पहचानने की
कहां थी ।
सुविधा
आंखों में जल रहा था
एक बड़ा उलाव
आग,
आग,
आग ही आग
आग से पलट कर देखना
मतलब –
अंधेरा ।
परछाईयां ॥
पहचान की दुविधा
अनछुए सम्पर्क,
दोहराता हूँ
अनुभवों मे
देखता हूं
नूर की बूंद में ।

कृति

अपने वीर्य से
लाश का चित्र बनाकर
उसके निचे लिखदूं
यह 'मैं' हूँ
और उस कृति को
मास्पद का वो कोना दूं
जिसकी खिड़कियां
मेरे परिचितों की
गलियो मे खुलती हो
ताकी फिर कोई परिचित
अपरिचित शब्दों में
य न पूछे
मैं कौन हूँ ?
कैसा हूँ ?
क्यों हूँ ?
सारे सवाल मर जायेंगे
वियं के जहर से !

आउट् ऑफ् सोशील् क्लास्

अपने
तिरसकार
और धिक्कार
के अर्थ ढूंढ़कर
अपने ईश्वर को
गाढ़ी उदासी में
डूबोना नहीं चाहता
क्यों कि–
मैं जानता हूँ
जो ठूंठ
चीख रहा है
मेरे अन्दर
उसी स्थिति के बीज
पनप रहे हैं
उसके अंतर में
मैं उसे—
भटकाना नहीं चाहता
सोचों की
अंतहीन घाटियों में
क्यों की
मेरा ईश्वर भी है
मेरी तरह
आउट्-ऑफ्-सोशील्-क्लास्

❀ ❀

❀

आप तो दादा हैं

चापलूस लड़की
बेचारे के मुंह पर
पोत देती है
'आप तो दादा हैं'
ऊपर से नीचे
अन्दर से बाहर तक
परेशानी खोजती है
'दादा' वो कहां पर है
कहीं भी कुछ
नजर न आने की विकलता
अपनी नजर पर थूकती है
और—
पुश्तों का इतिहास
चाटती है
'दादा' वो किसका है
कुआंरा ?
मगर दादा ? ?
कुआं........(!)
दूसरे दिन—
लड़की की छातियां
सूंघ कर
आए भी तो यहां से
'दादी' हैं—
'उस' दादा की !

(पांच रोज पहले सड़क पर घटित इस घटना को लेकर हम खूब हंसे थे । मैं इस 'सम्मिलित हंसी' को खोना नहीं नहीं चाहता । अतः........)

जिज्ञासू

कुत्ता
कुतिया को
पिछे से
सूंघता है
चाटता है
फिर—
दुखती आंख में
ड्रापर से
गुलाब-जल डालता है
पावों के बल
नाचता है
और,
जीभ निकाल कर
चिलमिलाती धूप में
हांफता है
पास खड़ा
जिज्ञासू बच्चा—
'मम्मी को पापा छे
प्याऽऽऽल है।'

एस्किमों—स्माइल्

मुझसे ही अज्ञात
मेरी समद विरानियां
'ऐलकिमों—स्माइल्' को
उदास कन्दराओं का
सर फोड देती है
फिर भी—
नहीं टूटती
कन्दराओं की
मौन चुप्पया
पथराये नयन के
पिघले आंसू आंसू
मेरी विरानगी को
चुमने आतुर
होठो की लकोर पर
जड़ देती है
ठंडी मुस्कराहटों के
समवेदना बिंदु
स्वयं ले किए
बगावत, मोहब्बत
और पीड़ा के
अघमुत समझौते
रोते हैं
कविता के
भीतर।

प्रतिशोध

एक बेनाम पुरुष
शहर के बीचो-बीच
धक्कों की भीड़ में
आग में झुलसते
मांस पिंड का
अपमान कर देता है
प्रतिशोध में—
मांज में कसी २०६ हड्डियां
ललकारती है
द्वन्द्व युद्ध के लिए !
एक लाल होठों वाली
मेमसाहिबा
सड़क की छाती पर
लज्जित कर देती है
टाई की गांठ में फंसे
व्यक्ति को
नहीं व्यक्तित्व को
प्रतिशोध में-
चूम लिया जाता है
'उसे'
सरेआम ।

बंद मुट्ठियां
मुट्ठियों के वक्ष पर
पसीने का सागर
सागर (में)
दो शब्द पंछी
'पूछ, और 'वास्तविकता'
अंगुलिया चटखी
सागर छलखा
वक्ष बहने लगे
पंख फड़-फड़ाये
किन्तु
डूब गया
तैरने के अभ्यास में
उड़ने का विश्वास
टूटे अक्षर
बोले,
आसमान नाप दो
मैंने आईना दिखा दिया
मैं चौंका
पंछी चिल्लाये
अरे— तुम्हारा आईना
आंख मारता है
आसमान से
धरती को !
(मैं सदके जाऊं हरामजादों पर आंख मिलाने को आंख
मारना कहते हैं । पिल्ले कहीं के)

लाश का मनमीत

दिनकर की लाश को
ठंडे रक्त से नहला कर
प्रभात फेंक देता है
दूरीयों के उसपार
अम्बर की अर्थी पर
धूप के कंधों पे
सारा दिन—
वृद्धि धूप
खोजती है
लावारिश लाश के
वारिश को
हर गली, हर द्वार
हर शहर हर गांव
है कोई........
लाश का दावेदार
अरे कोई है........
मनमीत
थक हार कर
सो जाती है धूप
संध्या के बिस्तर पर
रजनी का कफन ओढ़ कर
क्रम यही क्रम
चलता है सदियों से
पर लाश का
मनमीत नहीं मिलता
शायद
मनमीत ही नही होता !

"मैं"　　"कुत्ता"

नहीं,

तुम्हारी गोद में
फूलता
तुम्हारी आंचल पर
सोता
तुम्हारे साथ-साथ
रहता
कुत्ता।
अच्छा था
पैदा होता
कुतिया की कोख से
'मैं'
नहीं-
कुत्ता।

रिश्तों का

मुझे ज्ञात है—
रक्त के कणों में
रिश्तों का
कोई वजूद नहीं होता
रिश्तों का इस्तेमाल
रंगों की तरह करते हुए
हम—
जिस्मानी या भौतिक
'जरूरतों' को
कोई आकार (!) देने का
असफल प्रयास करते हैं
असफलता के इंक्लाब
को कुचलने
हम आविष्कार करते हैं
कविताओं और नज्मों जैसी
नुकिली संगीनों को
'हम'
'हमारा वजूद'
जो कुछ भी होता है
फलसफों व कहानियों
में होता है
इनके बाहर
'कुछ न होने का'
सबूत लिए
प्रश्न व प्रयास होते हैं !

चूहा

रोज रात
मेरे दरवाजे से
चुपचाप
एक चूहा गुजरता
मैं सोया सोया
देखता
दरवाजा बन्द नहीं
कर पाता ।

● ●

पिल्ला

उन्होंने पाला पिल्ला
खिलाते डेढ़ सेर मांस
पिलाते ढ़ाई सेर दूध
सुलाते डनलप पर
नहलाते सेम्पू से ।
ओ,
अनाथालय के बच्चों·
मेरी बात सुनो!
तुम भी
कुत्ते बन जाओ ।

गेंहु

मेरी माँ ने
छत पर छीटें है गेंहु
मेरी बहन
बिन रही कंकड़
सिर्फ कंकड़ ही कंकड़
कंकड़ो के बीच-बीच
कहीं-कहीं गेंहु।

व्यक्तित्व

हमें
तंग मकानों की घुटन
टूटे बर्तन
फटे कपड़े
घिसे जूते
और कर्ज
नहीं सताता
काश ! यही व्यक्तित्व
जीवित रह पाता ?

● ●

विशेष-व्यक्तित्व

कुछ व्यक्ति
विशेष व्यक्तित्व के होते हैं !
अखबारों में हुए दंगे
कमरों में कैद घुटन
टूटी हुई चप्पल
लुढ़कते बर्तन
रेडियो पर चिल्लाती मुबारक बेगम
और पायल निगोड़ी की ताल पर नाचती
मीना कुमारी का
उनके जीवन से कोई वास्ता नहीं होता
य नये परिवेश में लिपटे मुखौटे
बाहर नहीं, अपने अंदर जीते हैं ...
काश ! हमारे भी होता 'विशेष व्यक्तित्व
काश....!

बेहया शाम

बस्तियों ने
ली अंगड़ाई
अलसाई सड़क
खाने लगी उबासी
लालाजी कुतरने लगे
बेस्वाद कच्ची रोटियां
बंद हो गई
सरकारी राशन की दूकान
पंडित जपने लगा
हरे राम हरे राम........
पनवाड़ी बजाने लगा
कत्थे का लोटा
पसर गई सड़क पर
बेहया शाम

गाँव

गाँव
किसी मरे हुए
कुत्ते सा
सड़ रहा चौराहे पर ।

● ●

दर्पण

दर्पण में देखते हैं
सूरतें
सूरतें देखती है आईना।
—और फिर
सूरतें-सूरतें
दर्पण-दर्पण ।

दस्तक

किसी के दरवाजे पर
दस्तक दिये बिना
कमरे में दाखिल होना
व उसके विचारों को
उथल-पुथल कर देना
कितना आसान है !

दरिद्रता

चिथड़े में लिपटा
छाती से चिपटा
बिलख रहा था
सूखे स्तनों से
दूध के लिए
काश !
मां के
आंसुओं से
उसका पेट भर पाता ।

पुरुष

मिस्त्रीचन्द बरफी वाला
चन्दू चाट वाला
कल्लूमल ठेकेदार
मोती पान वाला
सुरमई तम्बाकू वाला
बुल्लेशाह पहलवान
छुट्टनलाल नाई

• •

नशा

पास मैं बैठूंगा
पर—
बोलूंगा नहीं—
क्योंकि नशा चढ़ता है
बोलता नहीं ।

● ●

गदहा

प्राइमरी स्कूल का
शिक्षक
बोर्ड पर लिखता है
शब्द
ग...दहा....
और हम
सारी जिन्दगी
दोहराते हैं
गदहा !
गदहा !!
गदहा !!!

• •

संक्रामक

बगल से
गुजरी
जूहो के
जूडे की गंध
आस पास
हवा में फैले
कीटाणु
संक्रामक ।

स्थिर

रुकना,
रुकना और चलना
आवारा आँखों का
स्थिर,
रुकना,
सिर्फ महसूस करना ।

जिन्दगी

जिन्दगी
उस मुड़ी हुई
डायरी के पन्नों की
तरह है
जो किसी
अनपढ़
पाठक की पकड़ में
कसमसा रही है !
तड़प रही है !!

• •

फिसलना

धड़ड़ड़ धम्
गिरना
कच्ची उम्र वालों का
फिसलना
पुनः उठ जाना
फुर्ती से ।

सहवास

कूंआ नहीं सूखता
गिरता नहीं आकाश
चार पांच महीनों
का
बिछुड़ना
फिर
वही सहवास ।

● ●

महिने का पहला दिन

ऑफिस से
हड़बड़ा कर
भीड़ बेतहाशा
निकली
मालूम हुआ
एक लम्बे
समय के बाद
बहुत से
कैदी मुक्त हुए ।

● ●

पति

पति को बदलना
पतियों को बदलना
और बदलते चले जाना
फैशन की तरह
उस हालत में
कैसे होता पति !
रह पाता पति !!

अफसर

एक अफसर
बैठा ऑफिस के अन्दर
बड़ी-बड़ी मूँछें
जुल्फें
टेबल पर फाइलों का ढेर
ढेर पर रखी टोपी ।

साथी

सात साल पहले
हम तुम दोनों मिले थे
साथ-साथ बैठे थे,
खेले थे—
घूमे थे—
दोनों में एक दूरी थी
कुछ कुछ संकोच की
क्योंकि
अभी तुम मेरे अभिन्न नहीं
केवल साथी हो !

दरारें

हर रोज
सीने में
डालती है
दरारें
वे आकृतियां ।

● ●

अकेला

मैं—अकेला
ग्रह मे डूबा
अज्ञातवास
के
दिन गिनता हूँ ।

उदासी

उदासी
इच्छाओं के अम्बार
बीते क्षण
याद दिलाते हैं
यादों का गुब्बार
पतझड़
के पत्तों सा
जाती है बिखर ।

● ●

जिन्दगी

जिन्दगी
अर्थहीन
रेत का महल
सम्भावनाएं
स्वार्थ
जवानी का आईना ।

दर्जी

ये कालेज के लड़के हैं ।
रोनी सूरत, दुबले पतले
धक्के खाते फिरते हैं,
सड़कों पर भी सिनेमा के गाने,
गाते, गाते, गाते चलते
दुनियां की सारी सुन्दरता पर,
मुफलिस होकर भी मरते हैं ।
बस, बुद्धि से काम लिया इतना
बुद्धू होकर बी० ए० करते हैं
अच्छा होता इससे—दर्जी,
बन कपड़े सीये होते—
कलेक्टर हो या एस० पी० सभी
खुशामद तो करते ।
शिक्षा पाकर भी झक मारा क्या,
कोई भी लाल बहादुर बने,
दिल चोर बने, कमजोर बने,
कुछ बोर बने, कुछ मोर बने
क्या ग्रेट बने, क्या रेट बने
सिगरेट दबाए फिरते हैं
समझाओ तो लड़ने दौड़े,—
जैसे अपमान कर दिया हो ।
मानो किसी ने गलती से
बन्दर को कांच दिखाया हो ।

● ●

पढ़ना

मैं पढ़ने से घबराता हूं ।
पुस्तक देख पसीना आता,
फल सोच सोच रोना आता,
पर याद कहां हो सकता है.
रोटी ज्यादा खाता हूँ,
गर्मी में नित गर्मी लगती,
सर्दी में नित सर्दी लगती,
वर्षा में मक्खी मच्छर से
बचकर झटपट सो जाता हूँ ।
निद्रा आने पर भी पढना,
तो विरही सा आहें भरता,
चुप चाप बन्द कर पुस्तक को,
टेबिल पर ही झुक जाता हूँ ।
आयु यों ही खोता हूं मैं,
पढ़ने में ही रोता हूँ मैं
क्या सफल बनूंगा जीवन में,
बस, सोच यही रोता हूं मैं ।।
पढ़ने से·······

जीवन

जीवन नैया
संसार समुद्र में,
बिना पतवार —
पवन झोंके के संग—
डोलकर—
भटक गई पतवार रहित नैया,
जा टकराई किसी—
अजनबी किनारे ,
पनाह की भूखी—
किसी अजनबी से निष्काम ।
कहो ? मैं हूँ साहिल—
साहिल की पनाह में—
होगा निष्काम सदन ।
नहीं भूल मेरी ही—
भटका रही है, इधर उधर ।

माँझी

माँझी ! कुछ गाते भी जाओ ॥
क्रोधित तूफ़ानी सागर में,
टूटे दिल के टूटे स्वर में,
टूटी वाणी भी गूंज उठे,
वह राग सुनाते जाओ ॥
घनघोर घटाएं घुमड़ रही,
फिर भी आशाएं उमड़ रही,
सागर के मन की बड़वानल को,
तुम ज्वलित करते भी जाओ ।
हम दोनों ही पथ के राही,
है दोनों को संग चलना ही,
घायल के आगे घायल की तुम—
व्यथा सुनाते भी जाओ ॥
सब व्यथा सुना डालो मुझको,
सब कथा सुना डालो मुझको,
तुम अपनी करुण कहानी पर,
आँसू ढलकाते भी जाओ ।
रोते रहो, लेकिन मुस्काकर—
धीमे-धीमे स्वर में गाकर
रह रह कर मुझको आज,
किसी की याद दिलाते जाओ
इस जीवन के अंतिम क्षण तक,
उस का साथ मेरे संग हो ॥
लहरों से लड़ने से पहले,
अपने अंतिम निर्णय से पहले,
नाव डूब जाने से पहले

उनकी याद

यादों के
सुनसान झरोखों से
आज फिर झांका है
भूली-बिसरी यादों ने ।
और मैं—
वियोग के तपेदिक से गिरा
सांत्वना की बिन बुनी खाट पर,
लेटे - लेटे
देखता हूँ
मेरे प्यार की, बनती-बिगड़ती
परछाइयां !
सामने की दीवार पर
एक रूप उभरा
और·········खो गया ।
शायद ! उनकी याद
निमन्त्रण दे रही है
काल को,
या फिर ये रात
यूं ही कट जायेगी,
और रात के साथी
ये सितारे भी—
छोड़ देंगे—मेरा साथ !

● ●

प्यार..........?

प्यार! प्यार!! प्यार!!!
एक सौदा हो गया है
सब ही चाहे मानें,
एक व्यवहार में बहा था।
सुपारी और पान का प्यार
अमर है।
अमर!
मानव से मानव का प्यार!
अब
हो गया, दुश्वार
अब इस प्यार में
ममता नहीं, मजबूरी है
विश्वास नहीं, वासना है
क्योंकि अब धन का प्यार
बिक चुका है,—धन के हाथों
वासना के नाम बाजार है!

• •

मजदूर

सूर्योदय से पूर्व
पेट के लिए
भाग्य से लड़ते हुवे,
माटी को अपना
पसीना पिला,
मालिक की झड़कियों से
बुझा लेता है
अपनी-प्यास।
सूर्यास्त पर,
रोटी के लिए
हाथ फैलाये,
यह-सोच
शायद
कुछ मिल जाये,
सो जाता है—
भूखा-प्यासा
आज का मजदूर।

आकाशवाणी

आकाशवाणी से आ रहा है
प्यार भरा गीत
महक रहे हैं, चहक रहे हैं
दो मीत।
वादा कर रहे हैं
निभायेंगे,
प्रीत।
मगर ये क्या ?
कहाँ गया मीत—बिखर गई प्रीत !
बिछुड़ गया दो हंसों का जोड़ा।
ये कौन पुकार रहा है—
दुहाई दे रहा है प्यार की
शायद ! नहीं जानता
रीत, इस संसार की
यहाँ तो बस परिवर्तन,
परिवर्तन—परिवर्तन और परिवर्तन
एक और अंगड़ाई—
'दिल टूट गया आपको आवाज न आई'
यही क्रम है संसार का
मिलन - वियोग - बिछोह
और
टूटना दिल का शीशा हो कर !

● ●

जेब नहीं होती

डाकू और बंधु
समय आने पर
धन लिया करते है.
चांद को
छोटी मछलियां
प्राय:
बड़ी मछलियों द्वारा
निगली जाती रही है।
ये माना की सरकार बदलती है।
लेकिन
कार, नहीं बदलती
केवल
नर ही बदलते हैं।
पापाचार
भ्रष्टाचार
एवं
समाचार की इति
कब किसने का—कौन - कब
क्या करेगा ?
कोई नही जानता
और
ये भी किसने कहा है कि—
खादी के चोले में जेब नहीं होती।

● ●

पहला विभक्ता

हाथ से छूटा दर्पण—
बिखर गया,
कई चेहरों में।
सभी एक से—
भिन्न!
आड़े-टेढ़े, टूटे-फूटे,
बिखरे से
समाजवाद के
सिद्धान्तों की तरह।

● ●

छूटता सिलसिला

अंधेरी-अनजानी, राह पर—
बढ़ता हुआ, पथिक।
प्रकाश की एक किरण
मिल जाने पर,
इस सफर की तलाश में
प्रायः
भटक जाता है।

● ●

तीसरा लिफ़ाफ़ा

इस छोर से उस छोर तक
बिखरे हुये,
मन्त्रायणों के टुकड़े
समझा रहे हैं—मानव को
भाग्य का भविष्य ।

● ●

अकाल

अकाल का ये शोर
सुन रहा हूँ,
एक
लम्बे समय से।
और
मन को सांत्वना
देने के लिये,
इस अकाल को
देश के भूखे-प्यासे,
समाजवाद के इने-गिने
सामाजिक ठेकेदारों के लिये
मान
लेता हूँ,
वरदान !

● ●

आशा

आशा
मानव भाग्य की रेखा
जो
न मिटी है,
और—
न ही मिटेगी।

o o

निराशा

निराशा,
ये तो, मानव के भाग्य में
समा गई है
जैसे
लोहे में जंग।

शून्य

शून्य है सागर गणित का
शून्य ही संसार है,
शून्य को निःसार कहते
शून्य अपरम्पार है।
शून्य को देखो अगर तो
शून्य बिल्कुल गोल है,
शून्य ही विज्ञान जीवन
शून्य सब की पोल है।
शून्य है बेडोल जीवन
शून्य खुद बेकार है,
शून्य होकर ही यह मानव
कर सका कल्याण है।
शून्य हो जाय अगर मन
शून्य फिर संसार है
शून्य हो जाये जो इच्छा
जग से बेड़ा पार है।
है गजब इस शून्य में
और गजब यह शून्य है
गुण अनेकों हैं मगर
यह शून्य फिर भी शून्य है।

"जोर लगाले अफसरशाही"

जोर लगाले अफसरशाही,
कितना जोर लगायेगा।
आजादी का दीवाना हम,
मौत से न घबरायेगा।।
हो अलामें चले लाठियां,
रक्तपात हो जायेगा।
पर न गुलामी का जीवन,
जेलों में रहने पायेगा।।
गिर जायेंगे गोली खा,
पर सिर नहीं झुकने पायेगा।
एक गिरेगा, दस उठेंगे,
नारा बढ़ता जायेगा।।
बढ़ना तूफां आजादी का,
कभी न रुकने पायेगा।
बलिवेदी में प्राण होय,
हर बन्दी स्वर्ग में जायेगा।।
बंदिश के गहने हैं बेड़ी,
आडा डंडा पायेगा।
खड़ी हथकड़ी कांजी पीकर,
सहती सहता जायेगा।।
सफा रेमीशन, काल कोठड़ी,
हंसते बेंतें खायेगा।
हर बन्दी पत्थर सीना है,
लोहा लेता जायेगा।।

● ●

"चापड़ा गया"

चापड़ा गया रे भाई चापड़ा गया, अब चमड़ी का नम्बर आवेगा।
हो जाओ होशियार साथियों, अपना भी नम्बर आवेगा॥

● ●

आज कलेजी, कल को भेजी, परसों पिण्डा खावेगा।
भूख लगेगी जब फिर तरसों, बच्चे संगले आवेगा॥

● ●

सब्जी के पैसे नहीं जुड़ते, जंलर बोवे खेत।
कोठी के चार आने पैसे, मिलकर खा गये हैड॥

● ●

कहता हूँ मैं बात पते की, केवल साथी एक।
दूर रहो इन हैडों से, ये चुगली करते ठेट॥

● ●

सरदारा अब तक नहीं छूटा, वै लिया छूटा लेट।
काट-काट कैदी-रेमीशन, ये अफसर भरते पेट॥

● ●

"कैदी देखले रे"

दी देखले रे देखले डिस्ट्रिक्ट जेल..........

१) तूने घूमके जेलें देखी पर यहां उलटा खेल,
   और जगह तो निकले पसीना,
   यहां निकलेगा तेल।

२) तुस की रोटियां, घास की सब्जी
   पानी का सब खेल
   दाल मिले बिन घोई प्यारे
   नहीं दर्शन को तेल...

३) अनुशासन जाने नहीं कोई,
   शिष्टाचार में फेल,
   बात—बात में जूते डंडे,
   गाली करती पहेल....

- कौन बहुतर कौन बदतर ?

१. खाल इन्सां की पहनकर, खा रहा इन्सान को,
किस तरह इन्सान कहदूं, बू न है इन्सान की जब;
कौन बहतर कौन बदतर ?

२. खा के टुकड़ा एहसान में, दुम हिला देता है स्वान,
पेट भर खाकर भी रिश्वत, गुर्रा रहा इन्सान जब,
कौन बहतर कौन बदतर ?

३. क्या कभी पशु ने किया, व्यापार अपनी जीत का ?
बेच कर दौलत में रिश्ते, कहला रहा इन्सान जब,
कौन बहतर कौन बदतर ?

४. खून हो इन्सान का, इन्सानियत के नाम पर,
दीन दौलत में बिके, औ' बिकें सिद्धान्त जब ।
कौन बहतर कौन बदतर ?

५. क्यों न है बहतर पशु, इस बुरे इन्सान से,
जो बेखुदी में जी रहा है, आज यह इन्सान जब ।
कौन बहतर कौन बदतर ?

● ●

:— यह घर डेरा चोरों का :—

यह घर डेरा चोरों का,
माल पका जो मोरों का,
बंदिश के बेमोरों का,
है खून पसीना छोरों का,
देख नाच इन मोरों का,
मौज बन गया चोरों का............

जंगर गिनकर आता है,
हेर तोड़ ले जाता है,
कोई पकी तोड़ ला जाता है,
कोई पकने को तड़पाता है,
हम पड़ा माल उड़वाता है,
यही डोर यही ओरों का..........

—: मेरे मंसूबे मेरे अरमां :—

बार–बार मंसूबे बनकर,
दिल में मेरे रह जाते हैं।
दिख जाती है ये हथकड़ियां,
अरमां मेरे ढह जाते हैं।
ले रहा उबाले रक्त आज,
भूला न फर्ज यह बंदी है,
उठते हैं रण की ओर कदम,
लेकिन पांवों में बेड़ी है।
है क्षोभ नहीं इस बेड़ी का,
है मुझे क्षोभ केवल इस पर,
बढ़ रहा शत्रु प्रतिपल आगे,
तुमने अहिंसा छेड़ी है।
बढ़ चलो आज रण के पथ पर,
दो सीख सिख हर शत्रु को,
यह भारत है जिसके वासी,
सहर्ष वेदि पर चढ़ जाते हैं।
बार–बार मंसूबे ....

करता तैयारी बार–बार ले,
नाम युद्ध के रोकने का,
तुम जान गए हो चाल सभी,
फिर होती अब क्या देरी है ?
मैं बंदिश का बंदी हूं,
पर भारत जन तुम हो स्वतन्त्र,
बढ़ चलो देश–हित उठा शस्त्र,
बज उठी आज रणभेरी है।

मेरे उत्तेजक जीवन-पथ,
सब दीवारों तक रुक जाते हैं,
हैं अरमां मेरे दिल में भी,
पर बेबस हैं ये रह जाते हैं।
बार—बार मंसूबे............

—: कंकर :—

आज मुझसे मैं जुदा हूँ,
हूँ खुदी में मैं बेगाना;
जल रहा बिन ज्योति दीपक,
है यही मेरा फसाना।
देख मुझको खूब हंसलो,
फिर वक्त आयेगा नहीं;
हूँ पहाड़ों से जुदा पर,
गुण जुदा मुझ में नहीं।
हूँ वही मैं अब भी पत्थर,
तुम भले कंकर ही कहलो;
है उसी का जिस्म मेरा,
मुझको कंकर कहके हंसलो।
मैं कुटा हूँ, मैं पिसा हूँ,
मैं मिटा, सह चोट दिल पर;
लम्बी सड़कें, ऊँची मंजिल,
बन रही हैं आज मुझ पर।
सिर उठा कर हर पहाड़ी,
दीवार ऊँची बन रही है,
मेरे जीवन को ये सड़कें,
विश्व-बन्धु कह रही है।
उन पहाड़ों से जुदा हो,
मैं नहीं नीचे गिरा हूँ,
जिन्दगी देखो जहाँ पर,
मैं खुशी से दे रहा हूँ।
भार बन जाए जहाँ पर,
व्यर्थ जीता है वो जीवन,
जो मिटा है और के हित,
है उसी का नाम जीवन।

रोशनी

चलते—चलते
सोचता
जा रहा था
रोशनी मिलेगी
विश्वास था
मन में
चांद की किरण
बादलों की ओट में
जो छुपी हुई है
शायद चमकेगी ।

● ●

ललकार

झुक न सका है सिर भारत का, कभी न झुकने पायेगा।

अरे शत्रु तूं फौज बढ़ाले,
कितनी फौज बढ़ायेगा।
बढ़ने लगेगा जब भारत,
तूं सिर न छुपा पायेगा॥

क्यों बढ़ता है इतना आगे,
व्यर्थ में जान गंवायेगा।
तेरी इच्छा स्वप्नमयी है,
सत्य न करने पायेगा॥

कृष्णार्जुन की जन्म भूमि को,
कभी न पिछे पायेगा।
हर सैनिक है भीम सरीखा,
खट्टे दाँत करायेगा॥

यह तेरी नादानी है,
तूं फिर पीछे पछतायेगा।
भारत कायर देश नहीं है,
जो तुझसे घबरायेगा॥

युद्धनाद के बजते ही,
हर बच्चा कदम बढ़ायेगा।
मातृ भूमि की रक्षा हेतु,
लोहा लेता जायेगा॥

भारत का हर बच्चा प्यारा,
वीर शिवा बन जावेगा ।।
देश के गौरव पर हर बच्चा,
हंसते शीश चढ़ावेगा ।।

बढ़ने वाले अरि सीमा पर,
महा युद्ध हो जावेगा ।
अन्तिम दम तक भारत-सैनिक,
रण में कदम बढ़ावेगा ।।

झुक न सका है सिर भारत का, कभी न झुकने पावे

प्यार

वासना की
चिन्गारी
से
बचना चाहता हूँ
नहीं तो
मुझे एहसास
होता है
प्यार !
मुझको !!
मार डालेगा !!!

● ●

इज्जत

मैं
पापकी इज्जत
करता हूँ
मैं क्या
सभी
पापकी इज्जत करते हैं
क्या
इज्जत नहीं
पापमें
रहती है!

"जीवन–साथी"

मैंने
जिसे चाहा
वह
जीवन साथी
मिला
पर
कुछ अजनबी सा !

क्षण

कभी
वह क्षण आयेगा
जब
तुम
और
मैं
मुक्त होंगे!

गये
हीरालाल की शादी में
बुलाने आये बारम्बार
कर न पाये
हमारा इन्तजार
और
चल दिये
सदर मुकाम ।

अन्धेरा

मैं
यहीं खड़ा हूं
देख रहा हूं
आगे अन्धेरा है
सोच रहा हूं
अंधेरे
व
रोशनी का मिलन ।

• •

❀ रोना ❀

रोना
छोटी छोटी बातों पर
हंसना
छोटी छोटी बातों पर
रोना और हसना
यह कैसा संयोग !

● ●

• पंछी •

उड़न पंछी
का
जब पर ही
कट जाय
तब
वह कैसा पंछी !

• •

पैसा व रिश्ता

बहन व भाई
का
रिश्ता
पैसे का रह गया
बाप व बेटे
का
रिश्ता
पैसे का रह गया
दोस्त व दोस्त
का
रिश्ता
पैसे का रह गया
आदमी व औरत
का
रिश्ता
पैसे का रह गया
भाई व भाई
का
रिश्ता
पैसे का रह गया
यह
कैसा
पैसा
यह
कैसा

दि

ख

ता

वाह पैसा !

वाह दिखता !!

" क्रम "

मिलना,
बिछुड़ना ।
रोना,
हंसना ।
शायद
जिन्दगी का
यही—क्रम है ।

मास्टर
पोस्टमास्टर
स्टेशनमास्टर
हेडमास्टर
मास्टर
मिनिस्टर
वाह रे
टर !!!

❋ फर्क ❋

बाप व बेटे का
चाचा व भतीजे का
भाई व भाई का
पती व पत्नी का
आपस में
मिलना
कहीं कहीं
कुछ
फर्क है !

बारिश

बारिश की इक शाम
सड़क पर
छाता लिये
जा रही थी
एक लड़की
मैं
शायद
भूल रहा हूं
अपना घर
याद आते आते भी !

● ●

भटकन

नहीं,
बचपन नहीं।
मोड़,
उसमें ही मोड़।
जिसका को
घनी झाड़ियों
के
पीछे
घना अंधेरा।

● ●

यादें

कुछ
लड़के-लड़कियां
बन्द
हो जाती है खिड़कियां
कमरे
के एकांत में
शायद
आती हैं
अंधेरे में यादें !

● ●

सर्दियाँ-गर्मियाँ

हरे भरे पर
नंगे पाँव चलना
आसमान का उतरना
धूप का उड़ना
लड़की का उभरना
दूर का चश्मा
लगाना
सब कुछ जान लेना
वाह रे !
सर्दियाँ-गर्मियाँ !!

• •

अजनबी

अजनबी !
तुम क्यों चुप हो
मुँह खोलते नहीं,
बोलते नहीं
आखिर तुम कौन हो !

● ●

पुष्प

पुष्प !
गन्ध से तेरी
घर महकता है
तू
जितना मन को
तू भाता है
कांटों पर
पलना
कैसा जीवन है !

अनाथालय

मैं
एक अनाथ को
देखकर
सोचने लगा
कितना
अच्छा है
पहले तो अनाथ बनाना
फिर अनाथालय खोलना !

● ●

उद्घाटन

मकतूल
मति मन्दार
सोने की कैंची से
काट डाला
मुबारकी
रंग का फीता
काट डाला
उद्घाटन के लिए
भर दो !

❀ फैशन ❀

कमर
उरोज
पैर
शरीर
इन सब का
नाप
संतुलित
रखना ही
शायद
आज का
फैशन है !

** सोच्चता **

लिखता हूँ
लिखकर
काट-छांट करता हूँ
पूर्ण
लिख नहीं पाता
सोचता हूं
तब
तक
आ जाती है
सड़क या कार

" टेलीफोन "

ट्न........ट्न........ट्न........
हेलो !
हेलो !!
एक हेलो
से
दूसरे हेलो तक
कितना
सस्पेन्स होता
शायद
हिचकोक भी
फीका पड़ जाता !

● ●

सुनो
अपने पिल्ले
के लिए
जो बचा रखा हो
ईसमें से
आधी रोटी दे दो
घबराओ मत
तुम्हारा
पिल्ला नाराज
नहीं होगा
भूखे को भोजन मिल जायेगा।

• •

'●' बाबु '●'

आफिस
का एक बाबु
नाम
हरगोविन्द
बैठा दफ्तर
के अन्दर
गाल
चिपके हुए
दाढ़ी
बढ़ी हुई
टेबल पर
रखी
फाईलें
व
फाईलों पर
पड़ा
नजर का चश्मा
बजाई
घंटी
आया चपरासी
नीची गर्दन
पेन्ट पर
कारी लगी हुई
कहा

पानी पिलाओ
सोचता है
पिलाऊँ या दूँ
व
मन ही मन
अपनी
सूझ
पर हंसता है !!!

● ●

उम्मीद

सब कुछ
तुम्हारे
लिए
महसूस
करता हूं
व
हर चीज
को
इस तरह
देखता
हूं
कि
हर चीज
में
तुम्हारी
छवि
नजर
आती है
मैं
भूलता नहीं
तुम्हारा
स्पर्श-सुख।
रंगों की पहचान !!
सुखद मोड़ !!!

इतना .
होने पर भी
मुझे
उम्मीद है
तुम जरूर मिलोगी !

● ●

विराम — चिन्ह

दो
शब्दों में
क्या
घुला है
पहले का व या च
या
अपने आप में
उड़ता है
विराम चिन्ह ?
कौन जाने ??
इसकी परिभाषा ???

● ●

" खोटा सिक्का "

आज के
जमाने में
जिन्दगी
की कीमत
जैसे
खोटा सिक्का
दुकानदार
को देने पर
वह देखकर
उछाल देता है
राह
चलता
साथी
देखकर
आगे
चला जाता
है
यहां
तक कि
वह
नजर उठाकर
भी

उस सिक्के
को
तरफ
नहीं देखता !
वाह रे खोटा सिक्का !!
आखिर है तो सिक्का !!!

●●

• पागलपन •

मैंने
उसे चाहा
मैं
सोचता हूँ
यह
प्यार है
लोग
कहते हैं
यह
पागलपन है !

• •

सम्बन्ध

तुम
नहीं जानती
कि
तुम्हारा होना
कितना
जरूरी है
एक
तुम्हारे होने
से
मैं
अनगिनत संबंध गढ़ लेता हूँ।

प्रयास

पहले ही
तुम्हे
किसी दूसरे ने
पा लिया होगा
फिर भी
प्रयास
करता रहता हूं
जानता हूं
अंत
हीन ही है!
यानि
प्रयास हीन!!

● ●

* बेचैनियां *

बेचैनियां
आखिर
ढूंढ़
लेती
है
अपने
लिए
खिड़कियां!

अन्तर

उनका पत्र आया
तो
जी में आया
मैं यह कर लूंगा
या
वह यह कर लेगी
लेकिन
अन्दर झांक कर
देखा
तो
महसूस हुआ
क्या फर्क है
मुझ में !
व
पंखहीन पंछी में !!